हिन्दी विभाग
स्नातक द्वितीय (II)
पत्र संख्या - 03

प्रश्न :- छायावाद के उदय के साथ रीतिकाल की भूमिका की विवेचना कीजिए।

उत्तर :- 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी तथा उनके सहयोगी लेखकों ने रीति कालीन प्रवृत्तियों का जमकर विरोध किया और इधर अपने काव्य संकलन 'पल्लव' की भूमिका में छायावाद का बचाव करते हुए सुमित्रा नन्दन पंत ने भी रीतिकालीन कवियों पर तीखे व्यंग्य किये हैं। रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा कि - 'पर आगे छायावादी कवियों ने अपने ढंग से रीतिकालीन प्रवृत्तियों को मान्यता भी दी, वैसे ही जैसे पितामह की प्रवृत्तियाँ कई बार पुत्र में नहीं, पौत्र में झलक मारती है।" निराला की ऐतिहासिक महत्व की कविता 'जूही की कली' न केवल अपने विद्यमान में कवित्त छंद पर आधारित है वरन नायक - नायिका प्रणय-प्रसंग की दृष्टि से अपनी संवेदना में रीतिकाल से जुड़ी हुई है। गीतिका में एक शृंगार गीत है - 'प्रिय यामिनी जागी'।

निराला का एक शृंगार गीत -

बीती रात सुखद बात में, प्रातः पवन प्रिय डोली,
उठी संभाल बाल, मृदु-लट, पट, दीप बुझा, हँस बोली

संयोग शृंगार की चित्रण में निराला आदि रीतिकालीन शृंगारिक प्रवृत्तियों से प्रभावित हो तो, यह अस्वभाविक नहीं होगी। कविवर प्रसाद में भी ऐसे प्रेरणा-प्रसंग देखे जा सकते हैं। 'आँसू' में एक मार्मिक और सुकुमाररूप का चित्रण है-

चंचला स्नान कर आवे। उस पावन तन की शोभा।
चाँद्रिका पर्व में जैसी आलोक मधुर थी ऐसी

सूक्ष्म और संश्लिष्ट शोभा-चित्रण की दृष्टि से यह छंद वैसे है प्रभावपूर्ण है, जैसे सौन्दर्य के प्रभाव को वह चित्रित करना चाहता है। इस चित्र को बिहारी ने पूरी तरह उकेरा है-

जदी कोर गोरे वदन, बड़ी खरी छवि देखु।
लसति मनो बिजुरी किए सारद ससि परिवेषु॥

दोनों के विधान में मुख्य अन्तर यह है कि बिहारी की परिकल्पना उत्प्रेक्षा के सहारे विकसित हुई है जबकि प्रसाद का अंकन बिम्बमयता में है अर्थात् रीतिकालीन कवि प्रस्तुत और अप्रस्तुत दोनों को और देता है, जबकि छायावादी कवि प्रस्तुत का हल्का उल्लेख करके अधिक रुचि से अप्रस्तुत को संवारता है और पाठक की कल्पना को सक्रिय करने के लिए अधिक अवसर देता है

प्रस्तुत सन्दर्भ में परम्परा और प्रयोग के उक्त रिश्तों को और स्पष्ट करने के लिए यह जानना भी आवश्यक यह है कि छायावादी विधान और रीतिकालीन अभिप्रायों में अलगाव कहाँ हुआ है? इस प्रसंग का एक बड़ा रोचक और शिक्षाप्रद उदाहरण प्रसाद जी के कामायनी की पाण्डुलिपि संस्करण में देखा जा सकता है।

रोम रोम ~~से~~ (से) चिनगारी, थे सघन जघन लहराते।
वेणी शिथिल खुली पड़ती थी पलक अधर सरकाते ॥

उल्लेखनीय बात यह है कि प्रसाद की पंक्ति 'अस्वीकृति कहती नहीं थी मुख से रीतिकालीन 'हाँ' संभाली नहीं वाले कवित से कहीं अधिक व्यंजनापूर्ण और सधी हुई है। फिर भी प्रसाद ब्यौरों को काटकर अनुभव के सांकेतिक रूप को ही स्वीकार करते हैं। यही छायावाद और रीतिकाल के बीच विभाजक रेखा है। रीतिकालीन वर्णन में अधिक दिलचस्पी लेता है। जबकि छायावाद की अभिव्यक्ति प्रति

अनुभव में ही है। एक लिए क्रौंच प्रधान है दूसरे के लिए सूक्ष्म प्रभाव। यही कारण है कि आँख के लगातार नौ छंदों में प्रसाद व्यवस्थित रूप से नख-शिख वर्णन करते हैं रीतिकाल में एकदम भिन्न धरातल पर। फिर इस पूरे प्रसंग में पहले और बाद में भी स्पष्ट कर देते हैं कि बाद का दसवाँ छन्द है- चंचला स्नान कर आये, चन्द्रिका पर्व में जैसी। उस पावन तन की शोभा, आलोक मधुर थी ऐसी। कि सौन्दर्य में अलग-अलग अंगों की सुन्दरता का महत्व नहीं, महत्व है सौन्दर्य की समस्त समानुपातिक (सानुपातिक) अनुभूति का जो अपनी प्रकृति में सूक्ष्म है।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथिशिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय
हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं०- 8292271041
ईमेल — benamkumar18@gmail.com

दिनांक
21/04/2020